Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 GISRRJ | Volume 7 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

वृद्धों में जीवन संतुष्टि एवं व्यक्तिगत और पारिवारिक कारकों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ० रागिनी कुमारी
एम०ए०, पी–एच०डी०
गृहविज्ञान,ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा (बिहार)

Article Info
Volume 7, Issue 6

Page Number : 01-07

Publication Issue :
November-December-2024

Article History
Accepted : 10 Nov 2024
Published : 20 Nov2024

शोध–सारांश

वृद्धावस्था मानव–जीवन की जैविक विशेषता होती है। उम्र का बढ़ना निश्चित रूप से मानव–जीवन में सम्पादित होती है जो मानवीय नियंत्रण से परे होता है। अतः वृद्धावस्था मानव–जीवन की वास्तविकता होती है।

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य वृद्धों में जीवन संतुष्टि एवं व्यक्तिगत और पारिवारिक कारकों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन करना था। इसके लिए समस्तीपुर जिला क्षेत्र से कुल 250 वृद्धों (उम्र समूह 60 वर्ष से 65 वर्ष) का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन पद्धति का अवलोकन करते हुए किया गया। काजी एवं श्रीवास्तव द्वारा विकसित जीवन–संतुष्टि मापनी एवं स्वयं शोधार्थी द्वारा विकसित व्यक्तिगत एवं पारिवारिक सूचना प्रपत्र के द्वारा संगत सूचनाऐं संग्रहित की गई। प्रदत्तों के विश्लेषणोपरान्त परिणाम में पाया गया है कि वृद्धों का जीवन–संतुष्टि शिक्षा वैवाहिक समायोजन एवं धार्मिकता संबंधी कारक से स्पष्ट रूप से प्रभावित होता है, जबकि यौन एवं शहरी–ग्रामीण निवास संबंधी कारक स्पष्ट रूप से प्रभावित नहीं करता है।

शब्द–कुंजी : वृद्धावस्था, प्रतिदर्शन, पारिवारिक, वास्तविकता

परिचय :

वृद्धावस्था मानव–जीवन की वह अवस्था होती है, जब व्यक्ति मानवीय जीवन के अंतिम चरण में होता है। इस अवस्था को मानव जीवन का संध्याकाल भी कह सकते हैं। सामान्य रूप से व्यक्ति जब 60 वर्ष की उम्र पूर्ण कर लेता है, तो उसके जीवन की वृद्धावस्था प्रारंभ होती है। इस प्रकार वृद्धावस्था उम्र बढ़ने की प्रक्रिया का प्रतिफल होता है जो मानवीय नियंत्रण से अलग होता है।

वृद्धावस्था में अनेक प्रकार के परिवर्तन होते हैं। शारीरिक दिखावट, शारीरिक कार्य–प्रणाली, त्वचा कोशिका में झुर्रियाँ पड़ना, बालों का रंग बदलना, कार्य–क्षमता में कमी, विभिन्न प्रकार की शारीरिक–मानसिक समस्याओं का प्रारंभ होना, हड्डियों एवं दाँतों में कमजोरी इत्यादि से संबंधित परिवर्तन होते हैं। वृद्धावस्था में पारिवारिक–सामाजिक जुड़ाव कमजोर होता है एवं सामाजिक गतिविधियों में हिस्सेदारी कम जाती है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

अपने समाज में प्रचलित प्राचीन रीति–रिवाजों के अवलोकन से स्पष्ट है कि, वृद्धों का समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। वृद्धों को प्रत्येक उम्र के लोग आदर–सम्मान करते थे एवं उनका अनुसरण करते थे। लेकिन समय परिवर्तन के पश्चात् व्यक्तियों में एकल परिवार की भावना विकसित हुई है, जिसमें लोग अपने वृद्ध माता–पिता को बोझ समझने लगे हैं। यदि कुछ लोग अपने वृद्ध माता–पिता की सेवा करते हैं तो उनमें से कुछ हीं व्यक्ति में सेवा भावना होती है जबकि अधिक में स्वार्थ की भावना होती है।

विभिन्न शोधों के आाधार पर परामर्शित किया गया है कि वृद्धावस्था में शारीरिक समस्याऐं तो होती ही हैं। इसके अलावे मनोवैज्ञानिक समस्याएँ भी होती है।

जीवन संतुष्टि का अर्थ वैसे संतुष्टि से होता है, जिसमें व्यक्ति अपने जीवन के प्रति सभी प्रकार के क्रियाकलापों से संतुष्ट होता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में जीवन शैली अपनाता है। यदि वह अपने जीवनशैली के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का प्रदर्शन करता है, तो वह जीवन–संतुष्टि को दर्शाता है जबकि जीवनशैली के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण जीवन–संतुष्टि को नहीं दर्शाता है।

मानव–जीवन में बहुत ऐसे कारक होते हैं जो जीवन संतुष्टि को प्रभावित करते हैं। उन कारकों में व्यक्तिगत, पारिवारिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, स्वास्थ्य, कार्यात्मक क्षमता, व्यक्तिगत मूल्य, सामाजिक संबंध इत्यादि से संबंधित मुख्य कारक होते हैं।

प्रस्तुत शोध में वृद्धों के जीवन संतुष्टि पर व्यक्तिगत एवं पारिवारिक वातावरण का प्रभाव को निर्धारित करने का प्रयास किया गया है। व्यक्तिगत कारक मनुष्य के व्यक्तिगत विशेषता को दर्शाता है एवं परिवार से संबंधित कारक पारिवारिक विशेषताओं को दर्शाती है। इस शोध में जीवन संतुष्टि पर प्रभाव डालने वाले कारक के रूप में यौन शिक्षा, ग्रामीण–शहरी निवास, वैवाहिक समायोजन एवं धार्मिकता को रखा गया है।

पूर्व के अध्ययनों की समीक्षा :

इस शोध में शोध–शीर्षक से संबंधित पूर्व में किए गए अध्ययनों का अवलोकन किया गया है।

पटेल एवं प्रिंस (2001) ने वृद्धावस्था और मानसिक–स्वास्थ्य से संबंधित एक अन्य अध्ययन में पाया है कि वृद्धावस्था में मानसिक स्वास्थ्य एक प्रधान मुद्दा है, जो वृद्धों में मनोवैज्ञानिक समृद्धि को बढ़ाती है।

कुमार (2003) ने भारत में वृद्धों में स्वास्थ्य स्थिति और स्वास्थ्य देख–रेख सेवा का अध्ययन किया है और परामर्शित किया है कि वृद्धावस्था में वृद्धों में स्वास्थ्य सेवा केन्द्र की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। स्वास्थ्य सेवा केन्द्र वृद्धों में विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य आधारित सुविधाएँ प्रदान करती है।

सिंह एवं मिश्रा (2009) ने वृद्धावस्था में अकेलापन, निराशा एवं सामाजिकता का अध्ययन किया हैं और परामर्शित किया है कि वृद्धावस्था में अकेलापन में निराशा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके अलावे उनका निष्कर्ष था कि निराशा और सामाजिकता के बीच नकारात्मक संबंध होता है।

श्रीवास्तव एवं मोहन्थी (2012) ने भारत में वृद्धों में गरीबी से संबंधित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन में पाया है कि, वृद्धों में स्वास्थ्य देखभाल में गरीबी एक मुख्य समस्या है। वृद्धों में स्वास्थ्य समृद्धि के लिए विभिन्न स्तरों में स्वास्थ्य व्यय आधारित सरकारी एवं निजी योजनाएँ सकारात्मक भूमिका निभाती है।

ठाकुर इत्यादि (2013) ने वृद्धों में स्वास्थ्य समस्याओं का अध्ययन किया है और निष्कर्ष के रूप में बताया है कि दृष्टि संबंधी, श्रवण संबंधी एवं तम्बाकू के उपयोग से संबंधित अधिकांश समस्याएँ होती है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में निम्न वजन संबंधी समस्याएँ अधिक होती है। इसके अलावे पुरुषों में हृदय रोग संबंधी समस्या और औरतों में मधुमेह की समस्या अधिक संख्या में पाया है।

चटर्जी इत्यादि (2019) ने निजी और जन सेवा आधारित स्वास्थ्य केन्द्रों में स्वास्थ्य देखभाल का अध्ययन किया है और परिणाम में पाया है कि, वृद्धों में स्वास्थ्य देखरेख के प्रति निजी स्तर पर स्वास्थ्य प्रबंधन को अधिक प्राथमिकता देते हैं।

साहू इत्यादि (2021) ने वृद्धों की स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे और स्वास्थ्य देखभाल आधारित होने वाले व्यय का अध्ययन किया है और परिणाम में पाया है कि वित्तीय प्रबंधन के माध्यम से वृद्धों की स्वास्थ्य संबंधी देखभाल को सकारात्मक रूप दिया जा सकता है।

शोध का उद्देश्य :

वृद्धों में जीवन संतुष्टि एवं व्यक्तिगत और पारिवारिक कारकों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन करना इस शोध का मुख्य उद्देश्य है।

परिकल्पनाऐं :

प्रस्तुत शोध की मुख्य परिकल्पना है कि, ''वृद्धों के जीवन–संतुष्टि पर व्यक्तिगत एवं पारिवारिक कारकों का भिन्नात्मक प्रभाव होगा।

प्रविधि :

(i) प्रतिदर्श :

इस शोध में बिहार राज्य के समस्तीपुर जिला क्षेत्र से कुल 250 वृद्ध व्यक्तियों का यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि के आधार पर चयन किया गया। चयनित प्रतिदर्शों की उम्र 60 वर्ष से लेकर 65 वर्ष (औसत उम्र 62.5 वर्ष) थी।

(ii) उपयोग की गई मापनियाँ :

(a) जीवन संतुष्टि मापनी :

उत्तरदाताओं के संबंध में जीवन संतुष्टि की जानकारी के लिए काजी एवं श्रीवास्तव द्वारा विकसित जीवन संतुष्टि मापनी का प्रयोग किया गया। इस मापनी में जीवन–संतुष्टि से संबंधित कुल छः क्षेत्रों जेसे–स्वास्थ्य, व्यक्तिगत, आर्थिक, वैवाहिक, सामाजिक एवं नौकरी से संबंधित कुल 60 एकांशों को सम्मिलित किया गया है। मापनी में उत्तरदाता के द्वारा प्राप्त उच्चतम अंक उच्चतम जीवन संतुष्टि एवं निम्नतम अंक निम्न जीवन संतुष्टि को दर्शाता है। यह मापनी भारतीय संदर्भ में व्यक्तियों में जीवन संतुष्टि के स्तर की जानकारी के लिए विश्वसनीय, उपयुक्त, वैध एवं वास्तविक मापनी है।

(b) व्यक्तिगत सूचना–प्रपत्र :

उत्तरदाताओं के संबंध में व्यक्तिगत जानकारी हेतु स्वयं द्वारा विकसित व्यक्तिगत सूचना–प्रपत्र का उपयोग किया गया।

प्रदत्त संग्रह की प्रक्रिया :

उत्तरदाताओं से शोध–शीर्षक से संबंधित संगत सूचनाओं की जानकारी के लिए मापनियों के साथ उत्तरदाताओं से संपर्क किया गया और उनके साथ आत्मीयता का संबंध बनाते हुए मिलनेका प्रयोजन बताया गया। इसके बाद उत्तरदाताओं के साथ आपसी विचार–विमर्श के आधार पर निर्धारित तिथि, स्थान एवं समय पर छोटा समूह बनाकर प्रदत्त संग्रह का कार्य किया गया। अशिक्षित उत्तरदाताओं से साक्षात्कार विधि के माध्यम से प्रदत्त संग्रह किया गया। प्रदत्त–संग्रह कार्य में आवश्यक सहयोग के लिए उत्तरदाताओं को धन्यवाद दिया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण :

संग्रहित किए गए प्रदत्तों को तुलनात्मक सांख्यिकीय पद्धति के आधार पर विश्लेषण किया गया और परिणाम तैयार किया गया।

परिणाम एवं व्याख्याः

(i) जीवन संतुष्टि और यौन :

उत्तरदाताओं के जीवन संतुष्टि पर शिक्षा संबंधी कारक के प्रभाव की जानकारी से संबंधित तैयार किए गए परिणाम को निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है :

सारणी संख्या–(i)

जीवन संतुष्टि पर यौन संबंधी कारक के प्रभाव का परिणाम

समूह	संख्या	जीवन–संतुष्टि का स्तर	
		उच्च	निम्न
उच्च शिक्षित उत्तरदाताऐं	80	61 (76.25%)	19 (23.75%)
निम्न शिक्षित उत्तरदाताऐं	90	52 (57.77%)	28 (42.23%)
अशिक्षित उत्तरदाताऐं	80	34 (42.50%)	46 (47.50%)

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं के जीवन–संतुष्टि पर उसके यौन संबंधी कारक का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि एक तरह जहाँ कुल 125 पुरूष उत्तरदाताओं में 79 अर्थात् 63.20 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जीवन–संतुष्टि दिखाई है, वहीं दूसरी तरफ कुल 125 महिला उत्तरदाताओं में 86 अर्थात् 68.80 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपने जीवन के प्रति संतुष्टि दिखाई है। इस तरह के परिणाम में हम देखते हैं कि महिला और पुरुष उत्तरदाताओं के द्वारा दी गई अनुक्रिया में बहुत कम हीं अंतर है। अतः इस तरह के परिणाम के संबंध में कह सकते हैं कि वृद्धों के जीवन संतुष्टि पर उसने महिला अथवा पुरुष होने संबंधी कारक का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है।

(ii) जीवन संतुष्टि और शिक्षा :

वृद्धों के जीवन संतुष्टि पर शिक्षा से संबंध में जानकारी के उद्देश्य से प्राप्त किये गये परिणाम को निम्नांकित तालिका संख्या–ii में प्रस्तुत किया गया है :

सारणी संख्या–(ii)
वृद्धों के जीवन संतुष्टि पर शिक्षा से संबंधित कारकों के प्रभाव का अध्ययन संबंधी परिणाम

समूह	संख्या	जीवन–संतुष्टि का स्तर	
		उच्च	निम्न
उच्च शिक्षित उत्तरदाताऐं	80	61 (76.25%)	19 (23.75%)
निम्न शिक्षित उत्तरदाताऐं	90	52 (57.77%)	28 (42.23%)
अशिक्षित उत्तरदाताऐं	80	34 (42.50%)	46 (47.50%)

उपरोक्त तालिका संख्या–(ii) के अवलोकन से स्पष्ट है कि, वृद्धों के जीवन संतुष्टि पर उनकी शिक्षा संबंधी कारक का सापेक्ष प्रभाव पड़ता है। इस संदर्भ में उत्तरदाताओं की अनुक्रिया थी कि शिक्षा के कारण वे वृद्धावस्था में शिक्षा संबंधी या अन्य कार्यों में संलग्न रहते हैं, जिससे उनकी जीवन संतुष्टि दृष्टिगत होती है, जबकि अशिक्षित उत्तरदाताओं में इस तरह की अनुक्रिया में कमी पाई गई। अतः इस परिणाम के आधार पर कहा जा सकता है कि, वृद्धों में जीवन–संतुष्टि उनकी शिक्षा संबंधी कारक से प्रभावित होता है।

(iii) जीवन संतुष्टि और ग्रामीण–शहरी निवास :

वृद्धावस्था में जीवन–संतुष्टि पर शहरी–ग्रामीण निवास संबंधी कारक के प्रभाव की जानकारी के उद्देश्य से प्राप्त किए गए परिणाम को निम्न तालिका संख्या–(iii) में उपस्थापित किया गया है :

सारणी संख्या–(iii)
जीवन–संतुष्टि और ग्रामीण–शहरी आवास संबंधी कारक के प्रभाव से संबंधित परिणाम

समूह	संख्या	जीवन–संतुष्टि का स्तर	
		उच्च	निम्न
शहरी उत्तरदाताऐं	125	98 (78.40%)	27 (21.60%)
ग्रामीण उत्तरदाताऐं	125	103 (82.40%)	22 (17.60%)

तालिका–(iii) के अवलोकन से स्पष्ट है कि, जहाँ कुल 125 शहरी उत्तरदाताओं में 98 अर्थात् 78.40 प्रतिशत उत्तरदाताओं में जीवन संतुष्टि है, वहीं कुल 125 ग्रामीण उत्तरदाताओं में 103 अर्थात् 82.40 प्रतिशत उत्तरदाताओं में जीवन–संतुष्टि है। इन दोनों समूह के लोगों में जीवन संतुष्टि के स्तर के अवलोकन से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं के जीवन–संतुष्टि के स्तर में कोई विशेष अंतर नहीं होकर बहुत कम हीं अंतर है। अतः इस परिणाम के आधार पर वृद्धों के जीवन–संतुष्टि पर शहरी–ग्रामीण आवास संबंधी कारक के प्रभाव को स्पष्ट एवं सार्थक नहीं मान सकते हैं।

(iv) जीवन संतुष्टि और वैवाहिक समायोजन :

वृद्धों के जीवन संतुष्टि पर वैवाहिक समायोजन संबंधी कारक के प्रभाव की जानकारी के उद्देश्य से तैयार किए गए परिणाम को निम्नांकित सारणी संख्या–(iv) में प्रदर्शित किया गया है:

सारणी संख्या–(iv)
जीवन संतुष्टि पर वैवाहिक समायोजन के प्रभाव से संबंधित परिणाम

समूह	संख्या	जीवन–संतुष्टि का स्तर	
		उच्च	निम्न
वैवाहिक रूप से समायोजित उत्तरदाताऐं	130	108 (63.32%)	22 (36.68%)
वैवाहिक रूप से कम समायोजित उत्तरदाताऐं	120	53 (44.16%)	67 (55.84%)

तालिका संख्या–(iv) के अवलोकन से स्पष्ट है कि वृद्धों के जीवन–संतुष्टि पर वैवाहिक समायोजन का स्पष्ट प्रभाव दिखता है, क्योकि वैवाहिक रूप से कुल–130 समायोजित उत्तरदाताओं में 63.32 प्रतिशत अर्थात् 108 उत्तरदाताओं ने अपनी जीवन के प्रति संतुष्टि दिखाई है, जबकि वैवाहिक रूप से कुल 120 कम समायोजित उत्तरदाताओं में मात्र 44.16 प्रतिशत अर्थात् 53 उत्तरदाताओं ने अपने जीवन के प्रति कम संतुष्टि प्रकट की है। इस तरह के परिणाम के संबंध कहा जा सकता है कि, वैवाहिक समायोजन के कारण व्यक्ति अपने जीवन में सभी प्रकार की जिम्मेवारियों का निर्वहन करते हैं और जीवन के उद्देश्य को पूर्ण कर पाते हैं, जिस कारण वे अपने जीवन के प्रति संतुष्ट होते हैं।

(v) जीवन–संतुष्टि और धार्मिकता :

जीवन–संतुष्टि पर धार्मिकता संबंधी कारक के प्रभाव की जानकारी के उद्देश्य से प्राप्त किए गए परिणाम के निम्नांकित तालिका में प्रदर्शित किया गया है :

तालिका संख्या (v)
जीवन–संतुष्टि पर धार्मिकता आधारित कारक के प्रभाव का परिणाम

समूह	संख्या	जीवन–संतुष्टि का स्तर	
		उच्च	निम्न
धार्मिक रूप से उन्मुख उत्तरदाताऐं	120	89 (74.16%)	31 (25.84%)
धार्मिक रूप से विमुख उत्तरदाताऐं	130	79 (60.76%)	51 (39.24%)

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि, जीवन–संतुष्टि की दृष्टि से धार्मिक रूप से उन्मुख एवं धार्मिक रूप से विमुख उत्तरदाताओं के बीच सार्थक अंतर है, क्योंकि कुल 120 धार्मिक रूप से उन्मुख उत्तरदाताओं में जहाँ 89 अर्थात् 74.16 प्रतिशत उत्तरदाताऐं अपने जीवन के प्रति संतुष्टि प्रकट की है, वहीं कुल 130 में 79 अर्थात् 60.76 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपने जीवन के प्रति संतुष्टि प्रकट की है। ऐसे परिणाम के संदर्भ में कहा जा सकता है कि धार्मिकता की भावना से व्यक्ति जीवन के प्रति जिम्मेवारियों का आत्मिक तरीके से निर्वहन करते हैं और अपने जिम्मेवारियों के निर्वहन में सफलता प्राप्त करते हैं और वे अपने जीवन के प्रति संतुष्टि का अनुभव करते हैं। अतः यह परिणाम वृद्धों के जीवन–संतुष्टि में धार्मिकता की भावना की भूमिका को दर्शाता है ।

निष्कर्ष :

इस शोध में प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि वृद्धों का जीवन–संतुष्टि शिक्षा वैवाहिक समायोजन एवं धार्मिकता संबंधी कारक से स्पष्ट रूप से प्रभावित होता है, जबकि यौन एवं शहरी–ग्रामीण निवास संबंधी कारक स्पष्ट रूप से प्रभावित नहीं करता है।

शैक्षिक प्रयोजन :

इस शोध का शैक्षिक प्रयोजन अति महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि शिक्षा–कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षार्थियों को वृद्धावस्था में जीवन–संतुष्टि की अवधारणा और जीवन–संतुष्टि को सहज तरीके से प्राप्त करने की युक्तियों से अवगत कराया जा सकता है।

शोध की कमियाँ:

शोधार्थी अपने इस शोध में कमियों को प्रकट करने में संकोच नहीं करती है, क्योंकि शोधार्थी का विचार है कि शोध की कमियों को जानकर ओर उसे दूर करके हीं शोध की मानकता को बढ़ाया जा सकता है। अतः शोधार्थी का मानना है कि अध्ययन का सीमित क्षेत्र, अल्प संख्या में प्रतिदर्श, शोध में सम्मिलित चरों का कम मात्रा में प्रयोग, इत्यादि संबंधी कमी का होना स्वाभाविक है।

परामर्शन :

शोध में हुई कमियों का संज्ञान के पश्चात् शोधार्थी का परामर्शन है कि, जीवन–संतुष्टि प्रत्येक मनुष्य के लिए एक आवश्यक क्षेत्र है। जीवन–संतुष्टि को प्राप्त करके हीं व्यक्ति जीवन की सार्थकता को प्राप्त कर सकता है। अतः प्रत्येक मनुष्य में बेहतर जीवन–संतुष्टि के लिए इस शीर्षक से संबंधित शोध कार्य करने की आवश्यकता है।

संदर्भ–सूची :

- **कुमार, भी० (2003)** : भारत में वृद्धों में स्वास्थ्य देखभाल के लिए स्वास्थ्य सेवा केन्द्रों की भूमिका का अध्ययन, *वृद्धावस्था आधारित शोध पत्रिका,* वॉल्युम–15 (2–3), पृष्ठ–67–83
- **चटर्जी, सी०, नायक, एन०सी०, महाकुंद, जे० एवं चटर्जी, एस०सी० (2019)** : भारत में वृद्धों में स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए निजी एवं सार्वजनिक सतर के सेवा संबंधी कारकों का अध्ययन, *स्वास्थ्य प्रबंधन योजना*
- *आधारित पत्रिका,* वॉल्युम–34(1), 736–751
- **ठाकुर, आर०पी०, बनर्जी, ए० एवं निकुम्ब, भी०बी० (2013)** : वृद्धों में स्वास्थ्य समस्याऐं, *स्वस्थ्य एवं औषधि विज्ञान से संबंधित शोध पत्रिका,* वॉल्युम–03 (01), 19–25

- **पटेल, भी० एवं प्रिंस, एम० (2001) :** विकासशील देशों में वृद्धावस्था और मानसिक स्वास्थ्य : गुणात्मक विश्लेषण, *औषधि विज्ञान आधारित शोध पत्रिका,* वॉल्यूम–36 (1), पृष्ठ–32–39
- **सिंह, ए० एवं मिश्रा, एन०(2009) :** वृद्धावस्था में अकेलापन, निराशा और सामाजिकता का अध्ययन, *औद्योगिक मनोविकृति विज्ञान से संबंधित शोध पत्रिका,* वॉल्युम– 18 (1), 51–55
- **साहू, एच०, गोविल, डी०, जेम्स, के०एस०, प्रसाद, आर०डी० (2021) :** भारत में वृद्धों में स्वास्थ्य मुद्दे, स्वास्थ्य देखभाल उपयोगिता एवं स्वास्थ्य व्यय का अध्ययन, *वृद्धावस्था और स्वास्थ्य से संबंधित पत्रिका,* वॉल्युम–01, इश्यु–21,
- **श्रीवास्तव, ए० एवं मोहन्थी, एस०के० (2012) :** भारत में वृद्धों में गरीबी, *सामाजिक सूचक आधारित पत्रिका,* वॉल्यूम–109(3), 493–514